Theory of Inflation

पूर्ति की क्षमता की तुलना में मांग अतिरेक के कारण कीमतों में वृद्धि को मुद्रा स्फिति कहा जाता है। वैसे मुद्रा स्फिति से तात्पर्य सामान्य कीमत स्तर में वृद्धि से है। लेकिन मुद्रा स्फिति वह स्थिति है जिसमें वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतें बहुत तेजी से बढ़ती है जबकि वस्तुओं तथा सेवाओं का उत्पादन उस गति से नही बढ़ता। इसतरह वस्तु की मांग एंव पूर्ति में असंतुलन के कारण कीमतें तेजी से बढ़ने लगती है। classical economists से ~~मुद्रास्फिति~~ लेकर Modern economists ने मुद्रास्फिति की व्याख्या अलग अलग ढंग से की है।

मुद्रास्फीति के संदर्भ में सर्वप्रथम classical economists ने विचार प्रस्तुत किया। उनके अनुसार "मुद्रा की मात्रा और कीमत में सीधा और आनुपातिक संबंध होता है। जब मुद्रा की मात्रा में वृद्धि होती है तो स्फिति का जन्म होता है।

मुद्रास्फीति दर को नया मुद्रा सृजन दर प्रभावित करता है। $\frac{\Delta M}{M}$ के द्वारा ΔP प्रभावित होगी। अगर $\frac{\Delta M}{M} = 3\%$ per year, तब मुल्य वृद्धि $\Delta P = 3\%$ per year. classical economists के मुद्रास्फीति संबंधित धारणा को रेखाचित्र से प्रदर्शित किया जा सकता है –

Garner Ackley के अनुसार "Demand pull inflation occures only when supply of commodity fixed, demand is rising continiously and consequently Price is also rising continiously."

निम्न रेखाचित्र की सहायता से Demand pull inflation को स्पष्ट किया जा सकता है —

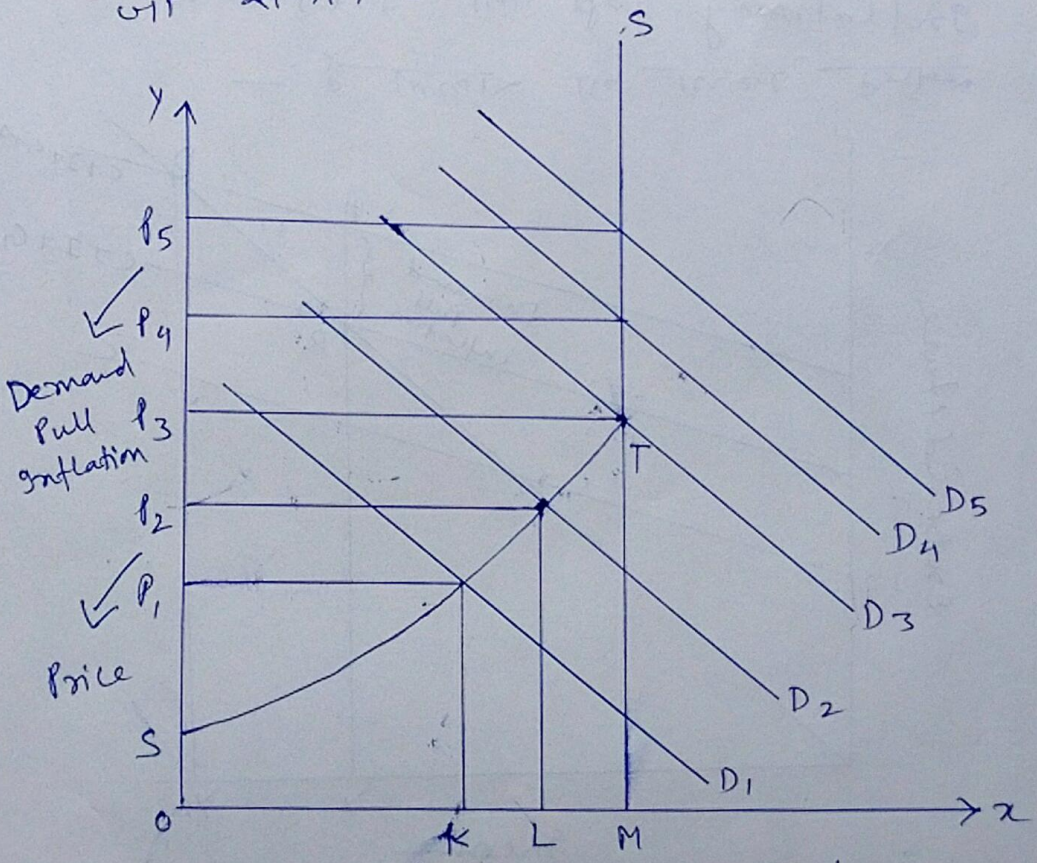

उपरोक्त चित्र में जब मांग D_3 से बढ़ती है तो पूर्ति OM स्थिर रहती है फलस्वरूप मूल्य बढ़कर P_4 तथा P_5 हो जाती है। इस मूल्य वृद्धि को Demand pull inflation कहते हैं।